15730

अवध रीडर्स

पत्रहितैषिणी

दर्जा दोयम

हस्ब मंजूरी प्राविंशियलटेक्स्टबुक कमेटी इलाहाबाद व जनाब डायरेक्टर साहब बहादुर पब्लिक इन्स्ट्रक्शन मुमालिक मग़रबी व शिमाली व अवध

उन्नासवीं बार तरमीम जदीद

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में छपकर प्रकाशित हुई

सन् १९२३ ई० ॥

कापीराइट महफ़ूज़ है बहक़ सरिश्तैतालीम अवध

क़ीमत फ़ी जिल्द -)॥

昭和46年度科学研究費購入図書

東京外國語大學
157301
47. 3. 31
圖書館藏

पत्रहितैषिणी ॥

प्रथम प्रकरण ।

पत्र लेख के विषय में ॥

इस विद्यासे चिट्ठियों का लिखना पढ़ना आता है, चिट्ठियां तीन तरह की होती हैं, एक छोटे से बड़े को, दूसरे बड़े से छोटे को, और तीसरे बराबर वाले को; हमेशा जब पत्री लिखना हो उस समय यह विचार लेना चाहिये, कि जिसे पत्र लिखना है, वह बड़ा है, वा बराबर, वा छोटा; छुटाई, बड़ाई, और बराबरी, दो प्रकारकी होती है, एक नातेदारी और मित्रता में; दूसरे जब कि नातेदारी आदिक न हो; परन्तु मुलाक़ात और जान पहिंचान वा संसार का कुछ काम उससे हो, नातेदारी में छुटाई, बड़ाई, और बराबरी अवस्था पर होगी, और जान पहिंचान में, उसके अधिकार, धन, और गुण पर; जैसे

कि, लिखने वाला, कैसेही बड़े पद वाला, धनी, विद्वान्, वा ज्ञानवान् हो, परन्तु, जब अपने से बड़े नातेदारको लिखेगा, तो अवश्य बड़ा और पुरुखा करके लिखेगा, और अन्यत्र जिसे लिखते हैं, चाहे वह आयु में छोटा हो, परन्तु, दरजे, धन, वा विद्यामें, लिखने वाले से अधिकहै, तो उसे अवश्य बड़ा करके लिखेंगे; और चाहे आयु में कैसा ही बड़ा है, पर पदमें लिखने वाले से कम है, तो बड़ा करके लिखना कुछ अवश्य न होगा ॥

चिट्ठी लिखने में कई बातों का विचार रखना चाहिये, पहले यह कि, सारे पत्रमें कोई व्यर्थ शब्द न हो, कि जिससे कोई प्रयोजन पत्र के आशय से न हो; दूसरे यह कि, ऐसे सहल २ शब्द हों कि जिन्हें सब लोग समझें, चाहे वह हिन्दी, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी में से जिस भाषा के हों; तीसरे यह कि, वर्णन बहुत संक्षेप और ठीक ठीक हो कोई बात अपनी सीमा से बढ़ने न पावे; चौथे यह कि,

संस्कृत की रीति पर पदों में बहुत समास न हो
पावें; पांचवें यह कि, बाप मांको ऐसी बातें न लि
कि आपकी बड़ी कृपा होगी, या मैं गुण मानूंग
क्योंकि ऐसी बातों से एक तरह की जुदाई पा
जाती है; छठें, इस बात का विचार रक्खे कि आ
से अन्त तक एकही प्रकार की लिखावट हो, ऐसा
न हो, कि कहीं छोटा, कहीं बड़ा, और कहीं अपना
कहीं अन्य बना देवें; सातवें यह कि, सरकारी
कागज़ात, अर्ज़ी परवाने, में किसी तरह की बना
वट वा सजावट वा कठिन शब्द न हों, केवल
साफ़ २ मतलब हो, हिन्दी में बहुत प्रकार के आदाब
और अलक़ाब नहीं होते जैसे कि उर्दू फ़ारसी में
हैं; हिन्दी में जो बड़े को लिखना हो तो सिद्धिश्री
और छोटे और बराबर वाले को लिखना हो तो
स्वस्तिश्री लिखते हैं, जब ब्राह्मण को लिखना हो,
छोटा बड़े को प्रणाम, और बराबर वाले को नम
स्कार, और जब वह मनुष्य जिसे चिट्ठी लिखते

हैं, अपने से छोटा ब्राह्मण हो, और ब्राह्मण को
छोड़, किसी वर्ण का छोटा बड़ा या बराबर हो, उसे
आशीर्वाद करके लिखैगा; और क्षत्रिय वैश्य वा
शूद्र, ये जब ब्राह्मण को लिखैंगे तो प्रणाम, पाला-
गन, वा दण्डवत् करके लिखैंगे, और आपस
में रामराम सीताराम और क्षत्रियों में विशेष करके
जुहार वा सलाम लिखते हैं ॥

०श्रीलिखियेषट्गुरुनको, पांचस्वामिरिपुचारि।
तीनि मित्र द्वै भृत्यको, एक पुत्र अरु नारि॥

अर्थात् गुरूको श्री ६, और स्वामी को ५, शत्रु को ४, मित्र को ३, टहलू को २, पुत्र और स्त्री को १ लिखते हैं ॥

दूसरा प्रकरण।

छोटों की ओर से बड़ों को।

१ पत्र गुरू के नाम ॥

सिद्धिश्री ६ सर्वविद्यालंकृत सर्वोपरि विराज-

मान गुरूचन्द्रमौलि जीव को चरणसेवक रा
नाथ का साष्टाङ्ग प्रणाम पहुँचै ॥

आज के आठवें दिन मेरे भाई का विवाह होग
बरात गंगाजी के पार चार मंज़िल पर जावेगी। आ
जानते हैं कि मेरे घर में आज-कल मुझे छोड़ को
प्रबन्ध करने वाला नहीं है; और काम बड़ा है; इ
लिये मनोरथ करता हूं कि १२ दिन की छुट्टी कृपा ह
कि इस कार्य से निपट कर बहुत शीघ्र फिर हाजि
होऊं, मुझे बहुत शोच है कि मेरे पढ़ने में बड़ा ह
होगा कक्षा के सब लड़के आगे बढ़ जावेंगे औ
मैं पीछे रह जाऊंगा, परन्तु क्या करूं लाचार हूं, इ
कार्य का करना भी आवश्यक है, भला आप
कृपा से परिश्रम करके शीघ्र ही बराबर होजाऊं
मिति वैशाख बदी ३ संवत् १९२६ तथा अं
तारीख ३ सन् १८७० ईसवी ॥

२ पत्र पुत्र की ओर से माता को ॥

सिद्धिश्री ६ श्रीशुद्धात्मा योग्य जननी

चरणसेवक शिवकुमार का साष्टाङ्ग प्रणाम पहुँचै ॥

आपकी चिट्ठी पहुँची उसे पढ़ कर मैं कृतार्थ हुआ आपकी आज्ञानुसार मैं बहिन के घर गया था, जीजा से मैंने कहा था कि माताजी ने बहिन को बुलाया है और आपको बहुत बहुत तरह से आशीर्वाद दिया है पर उन्होंने यह कहा कि अभी के जाने में मुझे अति दुःख मिलैगा जाड़े की ऋतु आने दो मैं साहब के साथ दौरे पर जाऊंगा उस समय ले जाना ॥

आगे मैंने यह बिनती की थी कि मेरे कपड़े बहुत पुराने हुये हैं दो तीन जोड़े भेज दो, परन्तु अभी तक कोई कपड़ा मेरे पास न पहुँचा, मेरा बड़ा हर्ज है जो दश बारह दिन और देर हुई तो बाहर निकलना बहुत कठिन होगा, और अधिक ग्लानि होगी ॥ मि० आषाढ़ शुक्ल ३ संवत् १९२७ तथा जून ता० ३ सन् १८७० ई० ॥

---

३ पत्र बाबा के नाम ॥

सिद्धिश्री ६ सर्वोपरिविराजमान गोत्रवर्द्धक बाबासाहब रामप्रसाद जीव को सूर्यबली का साष्टाङ्ग प्रणाम पहुँचै ॥

कल्ह रामपुरसे एक मनुष्य आया उसके कहने से जाना गया, कि वहां दो दिन तक बराबर पानी बरसा, नदी भी बहुत बढ़ी है, और ईश्वरकी कृपा से अन्नभी सस्ता होने लगा है, लोग अबतक व्याकुल थे कि क्या होगा, परमेश्वर ने अपनी दया की, अबपट्टोंके देनेमें विलम्ब न चाहिये, जो आज्ञा हो, तो कल जाकर बांट्दूं, मेरे पास छपेहुये पट्टे धरे हैं और वही लोग लेने वाले हैं जिन्होंने परसाल लिया था ॥ मि० कार्त्तिक बदी ५ संवत् १९२७ तथा अक्टूबर ता० ५ सन् १८७० ई० ॥

४ पत्र नाती की ओर से नाना को ॥

सिद्धिश्री ६ सकलशुभोपमायोग्य वंशवर्द्धनोपाय नाना जीको अब्दुल्लह का आदाब पहुँचै ॥

आप कह गये थे कि दूसरी दफ़अ की पुस्तकें आठ दश दिनमें हम भेज देंगे परन्तु एक महीने का समय हुआ अभी तक मुझे न कृपा हुई, पण्डित साहब प्रतिदिन कहा करते हैं, जिन लड़कों के पास किताबें थीं उन्हें उन्हों ने चढ़ा दिया, मैं अभी तीसरी दफ़अ में पड़ा हूं, आपके पास पुस्तकें धरी हैं, और यहां मोल लेने से सिवाय हानि के कुछ लाभ नहीं है अब सुधि करके भेजवा दीजियेगा, नहीं तो दफ़अ में किसी योग्य न रहूंगा, माताजी की ओर से प्रणाम अंगीकार हो ॥ मि० श्रावण सुदी ४ संवत् १९२७ तथा जुलाई ता० ४ सन् १८७० ई० ॥

५ पत्र नाती की ओर से नानी को ॥

सिद्धिश्री ६ सद्धर्मप्रतिपादिनी नानीजी को रामप्रसाद का प्रणाम पहुँचै ॥

यहां मैं बहुत अच्छी तरह आनन्द से हूं और आपके शुभ समाचार रात्रि दिन चाहता हूं,

तुम्हारी पत्री पहुँची, आपकी आज्ञानुसार १०) रु० का मनीआर्डर भेजता हूं वह भाई नारायणदास के नाम है जब पोस्टमैन रुपये डाकखाने से ला तो उसी फ़ार्म पर रसीद लिख देना किसी प्रका का कुछ खर्च न देना होगा, जो वह पूछै कि किसने हुण्डी भेजी है तो मेरा नाम लेवें और यदि पूछै कि किसके नाम है तो अपना नाम बता देवें तीन महीने पीछे दूसरा म० आ० १००) रु० क भेजूंगा. मेरा चित्त उसी ओर है मि० माघ बदी १ संवत् १९२८ तथा तीन जनवरी सन् १८७१ ई०

६ पत्र चाचा के नाम ॥

सिद्धिश्री ६ सर्वोपमायोग्य चाचा जीवक साहबदीन का प्रणाम पहुँचै ॥

जब से आप बलरामपुर को गये हैं तब आपका कोई पत्र नहीं आया पिताजी और मा जी सब बहुत व्याकुल हैं, अति शीघ्र अपने शु समाचार से संतुष्ट कीजिये, आप कहगये थे

हम वहां पहुँचकर तुरन्त आदमी भेजेंगे उसका भी कुछ ब्योरा न जान पड़ा, और राजा साहब से आप से भेंटहुई, वा नहीं, जो हुई, तो वे किस तरह से आप से मिले, चाहिये कि कोई न कोई यत्न यहां आपके उद्यमका जल्द निकल आवै, क्योंकि अब अवध में यही एक दो हिन्दोस्तानी सर्कारें हैं और उन्हीं लोगों के यहां हम लोगों का बड़ा मान है, पुस्तक बेचने वाले लाला रामदास मुझे मिले थे, अपने रुपये मांगते थे मैं ठीक २ नहीं जानता कि उनके कितने रुपये आप चाहते हैं नहीं तो मैं दे देता जो आप लिख भेजें उन्हें देदूं॥ मि० चैत्र बदी ३ बुध सं० १९२७ ॥

७ पत्र भानजे की ओर से मामा को ॥

सिद्धिश्री ६ विनोदभाजन मामाजीको कृपाशङ्कर का प्रणाम पहुँचै ॥

आगे जो छोटी बहिन के विवाह के मध्ये आपने लिखाथा कि मिश्र सूर्यनारायण के यहां

गणना बन गई है उससे बहुत खुशी हुई, माता जीने भी बहुत प्रसन्न किया है क्योंकि बहुत अच्छा पढ़ा लिखा, मिहनती, कमासुत, वर है, ईश्वर उस को चिरंजीव रक्खे; आपने जो मिश्रजी की बातें लिखीं, मुझे उनसे बहुत ही आश्चर्य हुआ कि वे आपसे किस बात के बारहसौ मांगते हैं क्या हम उनके लड़के को मोल लेते हैं, जो कि इतने रुपये उन्हें देवें, हम से जो हो सकेगा वह अपनी लड़की को देंगे यह भलमंसी की बात नहीं है, भला वे इसी को बहुत नहीं समझते कि उनका घर बस जायगा, विवाह कार्य क्या हुआ, मोल-बेंच हुआ, बड़े दुःखकी बात है कि अभी ये रीतें यहां से दूर नहीं हुईं ॥ मि० चैत्र बदी ७ संवत् १९२७ तथा १ मार्च स० १८७० ई० ॥

८ पत्र बहिन के बेटेकी ओर से मौसी को ॥

सिद्धिश्री ६ धर्मपथसंवर्द्धिनी मौसीको राम-दयाल का प्रणाम पहुँचै ॥

आपका कृपापत्र डाक के द्वारा आया समाचार जाने आपने लिखा कि मेरे देखनेको आप का बहुत बहुत चित्त चाहता है सो सत्य बात है मुझे भी आपके चरण छूने की बड़ी इच्छा है क्योंकि अब ५ वर्ष बीतते हैं कि जबसे मैं आप से दूर हूं परन्तु क्या करूं न ऐसी कोई तातील होती है कि उसमें पहुँच सकूं और न छुट्टी मिलती है अब मैंने सीतापूर की बदली के लिये विनय की है चाहिये कि मंजूर होजावे, उस समय मैं जरूर जरूर आप के चरणों के निकट प्राप्त होकर जाऊंगा, माता जी फ़र्रुखाबाद से अभी नहीं लौटीं, कल पत्री आई थी उस में लिखा था कि अभी १५ दिन वहां और रहना होगा, उसके पीछे सब लोग वहां से चलेंगे चाहिये कि २० दिन में आ जावें ॥ मि० पौष शुक्ल १४ संवत् १९२७ तथा १५ दिसंबर सन् १८७० ई० ॥

९ पत्र छोटे भाई की ओर से बड़े भाई को ॥

सिद्धिश्री ६ सर्वशुभोपमेय कृपासागर भाई करीमबख़्श को रहीमबख़्श का सलाम पहुँचै ॥

कल तार के द्वारा भैया तालिब का हाल सुन कर बड़ा दुःख हुआ कुछ कह नहीं सक्ता, कि कितनी बड़ी दैवी पड़ी, कहां आप उसके विवाह के यत्न में थे, कहां, उसने सब को त्याग कर ईश्वर के यहां की यात्रा की, इस दुःख को कहां तक लिखूं कि रोने की भी शक्ति नहीं रही, बड़े शोक की बात है कि ऐसा सुपूत लिखा पढ़ा लड़का चल बसे अब हमारे शोच करने और रोने से क्या होसक्ता है धैर्य के सिवाय कोई औषध नहीं अब जो आप धैर्य न करेंगे, और सब को दिलासा न देंगे तो ये सब स्त्रियां शिर पीट पीट कर मर जावेंगी और कुछ लाभ न होगा ईश्वर उस विचारे को वैकुण्ठवास दे और हम लोगों को

संतोष दे ॥ मि० भाद्रपद सुदी ५ संवत् १९२८ तथा अगस्त सन् १८७१ ई० ॥

१० पत्र बहनोई की ओर से बड़ी साली को ॥

सिद्धिश्रीसन्मार्गावलम्बिनी ज्येष्ठा साली को नन्दनन्दन का यथायोग्य पहुँचै ॥

बहुत दिनों के पीछे तुम्हारापत्र आया आप के शुभ समाचार जानने से चित्त को कुछ संतोष हुआ, आप से जब पूछो कि आप पत्री किस कारण नहीं भेजती हैं, तो आप यह उत्तर देती हैं कि कोई लेखक न था, अच्छा ओढ़र आपने निकालाहै, और यदि निश्चय यही बातहै तो यह भी किसकी चूक है, मैंने तो आप से कई बार कहाथा कि केवल दो किताबें नागरीकी जो आप श्रम करके एक दो महीने में पढ़ लेंगी, तो अपने चिट्ठी पत्री लिखने में किसी से हाथ न जोड़ने पड़ैंगे, परन्तु आप क्यों मानेंगी, देखो मेरी छोटी बहिन ने देखतेही देखते नागरी का लिखना पढ़ना

सीख लिया, अब सब घरका हिसाब किताब वह
लिखती है, और माताजी की ओरसे सबको चिट्ठी
पत्री लिखा करती है, और घर में उससे बड़
काम निकलता है जब ईश्वर की कृपा से बड़ी
होगी, तो अपने लड़के बालों को पहिलेही से
अच्छी २ बातें सिखलावेगी, और जो वार्त्ता क
रेगी वह ठीक २ और बुद्धिमानीके साथ करेगी
अब भी कुछ नहीं गया है जो आप चाहैं तो एक
ही महीने में अपने प्रयोजन भरको आ जावे ॥
आगे शुभ मि० अगहन बदी ७ संवत् १९२
तथा नवम्बर सन् १८६९ ई० ॥

११ पत्र सेवक की ओर से स्वामी को ॥

सिद्धिश्री ५ धनधाम धरारक्षक प्रजापालक
श्रीमहाराज को रामसहाय का प्रणाम पहुँचे ॥
आज कल दासके घर में खर्च की ओर से
बहुत तंगी है, और इसी दशा में लड़के का
विवाह होनेवालाहै आपके सिवाय कोई हितकारी

र पालन करनेवाला नहीं, कि उससे अपनी
था कहूं जो विवाह न होता, तो इतनी आव-
कता भी न थी, परन्तु यह मर्यादा का काम
जो अच्छे प्रकार से न करैं, तो आपके नौकर
हलाते हैं, मैंने भैया मथुराप्रसादसे कईबार कहा
सर्कार से तुम खर्च मांगो, हुजूर जरूर कृपा
रेंगे, परन्तु उसको बड़ीलज्जा आती है, क्योंकि
मेशह से सर्कार का नमक खाते हैं अब थोड़ी
बात के लिये क्या आप को सतावें, परन्तु
ाचार जब किसी तरह का यत्न न होसका, तो
स समय मैंने उसके पूछे विना यह विनयपत्र
आपके शरण में भेजा है कि जो ऐसे समय
र्कार से पिछले हिसाब का फर्चा होजायगा तो
त्यन्त कृपा और पालन होगा ॥ आगे शुभ
मि० क्वार बदी ७ संवत् १९२७ ॥

१२ पत्र तहसीलदार वा और किसी सरकारीओहदेदारको ॥

सिद्धिश्री ५ न्यायपरायण सकलकरसंग्राहक

सामग्रीसम्पादक तहसीलदार साहब को प्र
के पीछे यह विनय है कि मेरे वहां आने
लिये आपका आज्ञापत्र आया, परन्तु मैं
किसी रीति से नहीं आ सक्ता, क्योंकि श्री
डिपुटीकमिश्नर साहबबहादुर की कचहरी में
मुक़द्दमा होरहा है, और मैं आप जाकर रूबक
करता हूं हां परसों तक जो परमेश्वर चाहेंगे
ज़रूर हाज़िर होऊंगा, जो कोई बहुतही ज़
हो तो कृपापूर्वक आज्ञा दीजिये उसी समय
की आज्ञानुसार कार्य होजायगा, वहां के हा
होने में मुझे किसी प्रकार का उज्र न था
रूबकारी से बिबसहूं, और पहिले जो आपने आ
ताल के चन्दे के बारे में लिखाथा मुझे मंजूर है
आप लिखें उसपर मैं अपने दस्तखत कर भेज
१०)रु० माहवारी तक मुझे बहुत न होगा क्यों
इसमें पुण्य बहुत भारी है ऐसे २ दश रुपये बहु
कामों में व्यय हुआ करते हैं॥ आगे शुभमि०प

दी ५ सं० १९२६ तथा फ़रवरी स० १८७० ई०॥

तीसरा प्रकरण ।

इस में बड़ों की ओर से छोटों को पत्र हैं॥

१ पत्र पिता की ओर से पुत्र को॥

स्वस्तिश्री चिरंजीवि वंशावतंस रामदत्त को
वप्रसाद का आशीर्वाद पहुँचै॥

बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं आया, जान
हीं पड़ता कि तुम क्या करते हो, कुछ पढ़ते
खते हो, वा नौकरी करते हो, हमने वहां तुम
इसलिये भेजा है कि जल्दी से कुछ विद्या
ढ़के अपने गांव आकर घर की ज़मींदारी आदि
ो देखो, परन्तु जान नहीं पड़ता कि तुम क्या
मझे बैठे हो, वहां तुम्हें ५ वर्ष हो गये और अब
क न जाना गया, कि तुमने क्या किया अपनी
ात तो यह है कि लिखना पढ़ना इस निमित्त
हीं है कि तुम अपने घरका काम और लोगों

के माथे छोड़कर आप दश रुपये की नौकरी पीछे सब देश की धूर छानो, जो इसी खेती रुई नील ऊख पोस्त जूट आदि के उपराजने कोई यत्न निकाला जावे तो कितना बड़ा ला देखो अंगरेजी कारीगरों को रुई की बड़ी चाहना और जितनी ही रुई हिंदुस्तान से उन्हें मिले कम है, वे लोग बराबर यहां के हाकिमों से प्रार्थ करते हैं कि कोई ऐसी युक्ति निकालिये कि य से बहुत रुई मिला करे ॥ आगे शुभ मि० चैत्र सु ६ संवत् १६२७ ता० ८ मार्च स० १८७० ई०

२ पत्र श्वशुर की ओर से दामाद को ॥

स्वस्तिश्री यशस्कर लक्ष्मीशङ्कर को शिव का आशीर्वाद पहुँचै ॥

प्रकट हो कि बहुत दिनों से तुम्हारी कोई सु दात्री पत्री नहीं आई, उधरका कुछ वृत्तान्त जा नहीं पड़ता, रात्रि दिन चित्त उसी ओर लगारह है, भला कभी कभी चिट्ठी तो लिखाकरो, क्यों

त्री से आधी भेट होती है, मनुष्य कैसेही शोच और काम में हो, पर जैसेही किसी मित्र वा भाई न्धु की पत्री आती है तो सब शोच दूर होजाते हैं और मन प्रसन्न हो जाता है, तुमने पहिले लिखा ा, कि मैं तहसील की प्रथम कक्षा की सब किताबें ढ़चुका हूं और इच्छा है, कि नार्मल स्कूल में रती हो जाऊं भैया मेरे! जो हमारी मति लो तो ुम्हारेलिये यह बहुत उत्तम होगा, कि तुम मिडिल क्लास अवश्य पास करो फिर किसी डाक्टरी पाठ-शालामें भरती होकर कुछ शिल्पविद्या सीखो इससे जहां चाहोगे कुछ कारखाना खोल दोगे नौकरीमें बड़ा खट २ है और फल कुछ नहीं है—व्यापार से धन बढ़ताहै और स्वतन्त्रता रहती है जैसे लखनऊ के इण्डस्ट्रियलस्कूल में लकड़ी पर बेल बूटे बनाना पीतल वा और धातुओं का बनाना सीखो और तुम्हें बहुत जल्द आवेगा ॥ शुभ मि० माघ बदी ५ संवत १६२७ तथा जनवरी सन् १८७० ई० ॥

३ पत्र पिता की ओर से कन्या को ॥

स्वस्तिश्री सौभाग्यवती रामदुलारी देवी चण्डीप्रसाद का आशीर्वाद पहुँचै ॥

बेटी तुम्हारी चिट्ठी पहुँची बड़ी प्रसन्नता मुख्य कर इससे बहुत आनन्द हुआ कि तुम्हारी लिखी हुई थी, तुम अपनी अम्मा से के शुभ समाचार कहदेना, मैं कह आयाथा, कानपुर से अपनी रसीद भेजूंगा, परन्तु वहां का मेरा योग नहीं पड़ा इस हेतुसे पत्र न भेजस अब यहां श्रीकाशीजी में ८ दिन ठहरूंगा, तुम्हें पत्री भेजनी हो, रामजीमल्लकी कोठी चौक के पते से भेजना, अठवारे के पीछे मैं क कत्तेको जाऊँगा, जो माल मैं लाया था, उसमें तिहाई बिकचुका है, और अच्छा लाभ हुआ और जो बाक़ी है, चाहिये कि कलतक यह बिकजावे, जो महाजन अपने रुपया मांगता तो तुम ५००) रु० वाला नोट किसी के पास गि

खवादेना और उसको बेबाक़ करदेना; नहीं तो न्द्रह बीस दिन में मैं आप खर्च भेजूंगा, तुम पने पढ़ने लिखने और सीने काढ़ने आदि में ल न करना, विद्या और गुण बड़े पदार्थ हैं थोड़ा हुत गणित का भी अभ्यास करलो, तो मेरी बड़ी सन्नता हो ॥ मि० वैशाख बदी ६ संवत् १९२६ था अप्रैल सन् १८६९ ई० ॥

४ पत्र बेटी की बेटी के नाम ॥

स्वस्तिश्री सरस्वतीमूर्त्ति नप्त्री पार्वती देवी ो शिवदयाल का आशीर्वाद पहुँचै ॥

बहुत दिनोंसे तुम्हारा पत्र नहीं आया, कल एक नकी ज़बानी सुना, कि तुम बीमार हो इसहाल े सुनने से मुझे बड़ी उदासी हुई, अब तुमको चित है, कि जल्द अपने जीव का सब हाल लिख भेजो, मालूम नहीं कि किसकी औषध करती हो, अच्छा, चाहे जिसकी औषध हो, परन्तु बरदार, बहुत संयम से रहना खट्टे मीठेका बचाव

करना जहांतक होसके भूख से अधिक कभी
खाना, जो तुम्हारे वैद्यकी सम्मति हो तो स्था
बदल डालो, इससे भी बड़ा लाभ होता है; ह
दोई का पानी बहुत अच्छा नैरोगिक है, औ
वहां तुम्हारी मौसी भी रहती है जो सबकी इच्छ
हो तो तुम वहां चलीजावो, और जबतक तुम्हा
जी अच्छा न होजावे, तब तक चौथे दिन एक
चिट्ठी भेजती रहो॥ आगे शुभ मि० आषाढ़ बदी
संवत् १९२७ तथा जून सन् १८७० ई० ॥

५ पत्र स्वामी की ओर से नौकर को ॥

स्वस्तिश्री आज्ञाकर रामदीन कहारको प्रकटहो
कि इस महीने की २४ तारीख को तीसरे पहर तक
हम सब लौट आवेंगे, तुम दो दिन पहिले सब
मकान झार बहार रखना कोठरी की कुंजी लाला
ठाकुरप्रसाद अदालत के नाज़िर के पास मैंने
रखवादी है, तुम उनके पास जाकर यह पत्र
दिखाकर ले लेना, और कोठरी से सब असबाब

निकाल जो जहां का हो वहां धर देना, कि
जिससे, मकान सरायसा न समझ पड़े, और हम
मुसाफ़िर से, रामदास ब्राह्मणको एकदिन पहिले
कहला देना, कि सबके लिये खाने को बनारक्खे,
सब भीतर बाहर के ५० मनुष्य होंगे—

लिफ़ाफ़ा के भीतर एक चिट्ठी बिरादरी के
निमन्त्रणकी है, वह ललिता नाई को देदेना, और
समझादेना, कि २६ तारीख का न्योता सब जगह
कह आवे, और सबसे हाथ जोड़ आवे, कि ज़रूर २
आवें; पहुँचतेही दो तीन सवारियां बिदा होंगी,
इस लिये १२ कहारों का बन्दोबस्त कररखना,
घोड़ों के लिये घास और हाथियों के लिये चारा
आदि सब बटोर रखना; कि उस समय दिक़त न हो
द० रामसहाय॥ मि० श्रावण सुदी २ संवत् १९२७
तथा जुलाई सन् १८७० ई० ॥

चौथा प्रकरण ।

छोटों और बड़ों के प्रश्न और उत्तर ॥

१ प्रश्न पत्र पुत्र की ओर से पिता को ॥

सिद्धिश्री ६ सर्वोपरि विराजमान चतुःफल-प्रद पिताजी को अम्बिकाप्रसाद का प्रणाम पहुँचै बहुत दिनों से आपका कोई कृपापत्र नहीं आया, चलते के समय आपने कहाथा, कि अठवारे २ पीछे तुझे चिट्ठी लिखा करूंगा, पर न जाना कि किस कारण अभी तक कोई पत्री नहीं आई, चाहताहूं कि कोई अपराध आधीनकी ओर से हुआ हो तो उसे क्षमा कीजियेगा, आप के कहने से मैंने वैशाख सुदी २ से कुछ संस्कृत पढ़ने का आरम्भ किया है, अर्थात् अभी हितोपदेश पढ़ताहूं, मुझ को निश्चय है कि जो इसीभांति सालभर पढ़ता रहा, तो नागरी बहुत पुष्ट व स्वच्छ होजायगी, अपने तन मन से श्रम करता हूं, आगे जो कुछ उसका फल मिले वही मुख्य बात है, किमधिकम्॥

मिती कार्त्तिक कृष्ण ११ शुक्र संवत् १९२७ ॥

उ० पत्र पिता की ओर से पुत्र को ॥

स्वस्तिश्री चिरंजीवि कुलभूषण अम्बिका-प्रसाद को शिवदीन का आशीर्वाद पहुँचै ॥

आगे मैं ईश्वर की कृपा से अच्छी तरह हूं, तुम्हारी कुशल क्षेम रातिदिन परमेश्वर से चाहता हूं, तुम्हारी चिट्ठी पहुँची, बड़ी प्रसन्नता हुई, तुम ने जो मेरे पत्रके न पहुँचने को लिखा सो ठीक और उचित है; यथार्थ जैसा तुम लिखते हो, मैंने वचन कियाथा, कि आठवें दशवें दिन मेरा एक खत पहुँचता रहेगा, पर क्या लिखूं, इन दिनों में हाकिमों के साथ बराबर दौरे में रहना हुआ, इससे पत्र भेजने में ढील हुई, बाक़ी सब तरह कुशल है निस्सन्देह रहो तुम्हारे संस्कृत पढ़ने का हाल जानागया, तुमने बहुत अच्छा किया, हितोपदेश पढ़ने से भाषा सुधरने के सिवाय और बहुत से लाभ हैं, कि उसके वर्णन बहुधा ऐसी शिक्षा के हैं,

कि जो उनका ध्यान किये रहे, तो व्यवहार में निपुण हो जाय जो तुम श्रम करते हो तो ईश्वर चाहेंगे तो अवश्य परिश्रमका फल पावोगे, बिन श्रम विद्या नहीं मिलसक्ती ॥ आगे मि० कार्त्तिक सुदी ५ संवत् १९२७ तथा सितम्बर स० १८७० ई० ॥

२ प्रश्न पत्र पुत्र की ओर से माता को ॥

सिद्धिश्री ६ जन्मसौख्यदा चरणभक्तिमोक्षदा माता जी को चरणसेवक मुरलीधर का प्रणाम पहुँचै ॥

घर से चलकर जीविका के खोज में काशी जी में पहुँचा, एक सप्ताह के पीछे कृष्णदत्त व गयादत्त महाजनों की दूकान में १५) रुपये महीना पर कारिन्दगरी के काम में नौकर हुआ, अभी केवल एक महीना मिला है उसमें ७) रु० खर्च होचुके हैं, बाक़ी ८) रुपये घर के वास्ते रक्खे हैं, भगवान् चाहेंगे, तो दो तीन महीने में २५) रुपये का मनीआर्डर भेजूंगा, इस शहर में

रेशमी कपड़े अच्छे और सस्ते बिकते हैं मेरा मन है कि जो आप आज्ञा दें, तो मोल लेकर भिजवादूं, इसके सिवाय मेरे एक मित्र यहां हुये हैं वे रेशमी कपड़ों की दूकान करते हैं, वे मुझे उधार भी देवेंगे, और मोलमें भी कमी करेंगे, आप की आज्ञा चाहता हूं, अधिक क्या लिखूं ॥ आगे शुभ मि० भादौं सुदी ३ संवत् १९२७ तथा अगस्त सन् १८७० ई० ॥

उ० पत्र माता की ओर से पुत्र को ॥

स्वस्तिश्री चिरंजीवि कुलकमल मुरलीधर को मेरा बहुत २ आशीर्वाद पहुँचै ॥

बेटा तुम्हारी चिट्ठी बड़ी औसेर में आई, सुनकर कान तृप्त हुये और छाती ठंढी हुई तुम नीके रहो, तुम्हारी नौकरी सुनकर बहुत आनन्द हुआ और सन्तोष हुआ तुमने जो लिखा कि तीन चार महीने में २५) रुपये का मनीआर्डर भेजूंगा, सो मेरे भैया! तुम जीतेरहोगे तो बहुतसे मनीआर्डर भेजोगे, और

मैं खर्च करूंगी, तुमसे मुझे सब आसरा है, यह तुम्हारी सुपूती है कि तुमको अपने घर की इतनी चिन्ता है, मैं यह क्या कम समझती हूं, कि तुम नौकरी पर निकले; अपने चार पैसे कमावो और खावो जो बचे सो भेजना मेरी ओर से तुम निश्चिन्त रहो मैं यहां अपने देशमें हूं, जो कुछ खर्च का काम लगेगा, सो सब सुभीता करलूंगी; तुम वहां परदेश में किसी तरह का कष्ट न उठाना; दो पैसे अपने पास हमेशा रखना, कपड़े के मध्ये जो तुमने लिखाथा सो भैया मेरे ! उसका हाल यह है, कि जो जरूरत पूछो, तो किस चीज़का काम नहीं है, पर हाथ में भी तो कुछ होना चाहिये, कोई सेंत नहीं देवेगा, जो कपड़ेवाला तुम्हारा व्यवहारी है, और तुम उससे लाभ की अभिलाषा रखते हो, तो तुम भी तो उसके मित्र हो, और उसे भी तो तुम से अपनी प्राप्ति की इच्छा है, जो उधार देगा तो अपना लाभ रखकर देवेगा, यह तुम्हारी भूल है,

कि वह तुमको सस्ता देगा, अच्छा अभी रहजावो, फिर आगे देख लिया जावेगा, आगे अशीष के सिवाय क्या लिखूं ॥ शुभ मि० क्वार बदी ३ संवत् १९२७ तथा सितम्बर सन् १८७० ई० ॥

३ प्रश्न पत्र पौत्र की ओर से दादे को ॥

सिद्धिश्री ६ सर्वोपरिविराजमान आर्यक दादा जी को कृष्णदत्त का प्रणाम पहुँचै ॥

अगहन सुदी १५ का लिखा पत्र कल्ह ३ बजे तीसरी डिलीवरी में हमको मिला समाचार जाने आपने जो छोटी बहिन के विवाह की बाबत लिखा है कि उसके ऋण से भी जल्द छुट्टी पाना बहुत जरूर है, और यह कि आपकी इच्छाहै कि कहींसे उधार लेकर फाल्गुन ही तक उसे किसी न किसी तरह अपने और पुरुषों की भांति कार्य करके ठिकाने लगादें सच तो यह है, कि जो आपके विचारमें होगा वही ठीक है, और मुझेउसमें शङ्का करनेकी सामर्थ्य नहीं, आप केवल उसका हालही

नहीं लिखते, किन्तु इस सेवक का सम्मत भी पूछते हैं इस वास्ते, बड़ी आधीनता और दीनता के साथ निवेदन है कि मेरी अल्प बुद्धि में अभी उसकी अवस्था कम है अर्थात् अभी केवल पांच वर्षकी होगी, उसका विवाह करना इतनी जल्दी अनुचित है, अभी बहुत शङ्का और डर हैं, अपने ऊपर अपराध क्यों लीजिये इसके सिवाय अभी इतना सावकाश नहीं, कि और काम न किया यही किया, फिर क़र्ज़ लेकर सैकड़ों रुपये ब्याज में देकर ऐसे काम कीजिये तो कोई विचार की बात न होगी, दूसरे इस समय पांच छह हज़ार रुपये ऋण लेकर उड़ाये जावें और घरफूंक तमाशा देखाजाय तो पीछेको इसका फल क्या होगा, और कहां से आवेगा, और किस तरह से बचाव होगा, आगे जो आदेश होगा उसका उल्लंघन न होगा॥ आगे शुभमि० पौष बदी ५ संवत् १९२६ तथा दिसम्बर सन् १८६९ ई० ॥

उ० पत्र दादा की ओर से नाती को ॥

स्वस्तिश्री चिरञ्जीवि कृष्णदत्त को विष्णुदत्त का आशीर्वाद पहुँचे ॥

तुम्हारी चिट्ठी आई, तुम्हारी बुद्धिमानी से बड़ा आनन्द और भरोसा हुआ, मुझे तुम्हारे पूछे विना रतीभर काम करने की इच्छा नहीं है ईश्वर ने तुमको सबतरह की बुद्धि दी है, और तुम्हारी हरएक बात बड़ी बुद्धिमानी और दूरदर्शिता की होती है तुम्हारे पत्र के आने पर मैंने भी जो विचार किया तो तुम्हारा मत समीचीन पाया, सचमुच, पांच छह वर्ष की लड़कीका विवाह करना बड़ी भूल है और सब तरह से इसमें डर है, इसके सिवाय धर्म्मशास्त्र में भी दशवर्ष तक कोई विधि नहीं इससे कोई जल्दी नहीं शायद तब तक तुम पर ईश्वर की कृपादृष्टि होजावे, और तुम किसी ऊंची नौकरी पर पहुँच जावो और उसके भाग्य से उसके विवाह करने की अच्छी सामर्थ्य होजावे

इस समय ऋण लेकर विवाह करना अपने ऊपर
एक अपराध मोल लेना है, अब मैं ऐसी बातका
मन कभी न करूंगा ॥ शुभ मि० माघ बदी २
संवत् १९२६ तथा जनवरी सन् १८७० ई० ॥

४ प्रश्न पत्र भानजे की ओर से मामा को ॥

सिद्धिश्री लौकिकोपहासभाण्ड हसनवेग को
असग़रअली का सलाम और बन्दगी पहुँचै ॥

एक महीने से माताजी को ज्वर आता है,
पहिले ठंढाई आदि पिलाई गई, परन्तु उनसे कुछ
ब्योरा न हुआ, अब डाक्टर साहब के विचार से
अंगरेज़ी कुनैन सबेरे व सन्ध्या को दीजाती है,
तब से ज्वर तो छूट गया है पर निर्बल बहुत हैं
वह भी धीरे २ जाती रहैगी आप सुचित्त रहैं माता
जी आपको बहुधा स्मरण किया करती हैं, आप
के पास कोई सवारी भेजने को मुझसे आज कहा
है, सो मैं चचा साहब का घोड़ा खुदाबख़्श साईस
के साथ भेजताहूं आशा कि अवश्य आइयेगा

और छोटे भाई नसीरुद्दीन को भी साथ लाइयेगा,
जिसमें आपके दर्शन और उनकी भेंट दोनों हों ॥
आगे शुभ मि० वैशाख सुदी १२ संवत् १९२७
तथा अप्रैल सन् १८७० ई० ॥

उ० पत्र मामा की ओर से भानजे को ॥

स्वस्तिश्री हास्यास्पदमूल चिरञ्जीवि सैयद
असग़रअली को हसनवेग की आशीश पहुँचै ॥

तुम्हारी चिट्ठी आई तुम्हारी माताकी बीमारी
सुनकर जीको बड़ी व्याकुली हुई हमको बड़ा
आश्चर्य है कि न तुमने और न तुम्हारे पिताने
बीमारी का हाल आज तक मुझको लिखा, और
अब लिखते हो, कि एक महीने से बीमारी है वाह २
आपकी बुद्धिमानी ईश्वर का धन्यवाद है कि अब
ज्वर घटगया है भगवान् चाहेंगे तो निर्बलता भी
चली जायगी यह औषध ज्वर के लिये तो अमृता
है, तुमने जो मेरे आने के मध्ये लिखा, सो तुम्हारे
लिखने का कुछ काम न था, मैं आपही तुम्हारी

पत्री के पहुँचते ही वहां आता परन्तु क्या कहूं सुनने में आता है, कि डिपुटी कमिश्नर साहब बहादुर कल नमककी कोठी देखने आवेंगे, और कुछ आश्चर्य नहीं कि हमेशह की तरह अस्पताल में भी आजावें, इस वास्ते कलतक आना न होगा परसों अपने यहां हमको समझो और नसीरुद्दीन को घोड़े पर चढ़ाकर भेजताहूं, यद्यपि इनके जाने से स्कूल में उनका बड़ा हर्ज होगा, और लड़के आगे होजावेंगे, तुम्हारे बुलाने से रवाना करता हूं दो एक दिन में उसे जल्दी लौटा देना नहीं तो स्कूल से नाम कटजायगा तब बड़ा विघ्न हो जायगा॥ शुभ मि० ज्येष्ठ शु० ३ संवत् १९२७ तथा सन् १८७० ई० माह मई॥

५ प्रश्न पत्र भतीजे की ओर से चचा को॥

सिद्धिश्री सर्वशुभोपमायोग्य श्री ६ चचा साहब को श्रीदत्त का प्रणाम पहुँचै॥

ईश्वरकी कृपा से यहां कुशल क्षेम है आपकी

कुशल चाहिये आपका कृपापत्र आया उससे कृतार्थ हुआ शंकर सुनार की बेकारी और कष्ट की व्यथा सुनकर बड़ा दुःख हुआ अपनी भागों नौकरी का द्वारा इन दिनों ऐसा बन्द होगया है जहां देखो यही पुकार है, कहीं नौकरी का नाम नहीं है, दिन पर दिन पढ़े लिखे लोग अधिक होते जाते हैं और सबको यही चाह रहती है कि कहीं मुहर्रिरी आदि की नौकरी करें, यह किसी को उत्साह नहीं होता कि कोई कार खड़ा करें या कुछ पण्य लेकर उसको लाभ के स्थान में बेचें अपने कार्य्य को अपनी बुद्धि और अनुभव से चमकावें सहस्रशःद्वार धनागम के हैं उनमें से किसी की चेष्टा न करते जिसको देखो चाकरी ढूँढ़ता है, अंगरेज़ लोगों को देखो कि अच्छे २ घर के बड़े धनवान् हैं परन्तु जिस काम में प्राप्ति देखेंगे उसीको करेंगे इन दिनों में दैवयोग से मेरी कचहरी में भी कोई स्थान शून्य नहीं है कि उसपर उन्हें बुलाऊं एक

मेरे सुहृद् गोंड़े के ज़िले में मुहतमिम बन्दोबस्त हुये हैं आप कहैं तो मैं उनके पास उसकी बाबत अर्ज़ी भेजूं, आश्चर्य नहीं कि वह साहब दया करके उसको नौकरी की कोई राह निकाल देवें, जैसा आप लिखेंगे वैसा किया जावेगा ॥ आगे शभ मि० कार्त्तिक कृष्ण १४ संवत् १९२७ तथा अक्टूबर सन् १८७० ई० ॥

उ० पत्र चचा की ओर से भतीजे को ॥

स्वस्तिश्री चिरञ्जीवि प्राणाधिकप्रिय श्रीदत्त का रामप्रसाद का आशीर्व्वाद पहुँचै ॥

तुम्हारी पत्री आई ईश्वर तुम्हारी दिन२बढ़ती करे और जीता रक्खे सचमुच अपूर्व समय आयाहै कि जहां देखो नौकरी का रोना है, और मैंने तुम को ऐसेही में लिखा कि जब उसके लिये ढूँढ़ते २ बनाय थक गया और कोई युक्ति न निकली, पड़ोसी का बड़ा स्वत्व होता है हमसे न बिनती करे तो किससे जाकर करे, गोंड़े जाने में उसको

कोई मिष न होगा, आप बहुत शीघ्र उन भद्र-पुरुष को लिखें, जिस समय वे बुलावेंगे उसी क्षण जावेगा, घरी भर की देर न होगी, तुम अब उसका वह हाल न जानो जो दशवर्ष पहिले था उसे पहिले इतनी आवश्यकता न थी, माता पिता का धन सेंत हाथ आया था, और यही कारण हुआ कि तुमने दो तीनबार इसमें लिखा था पर उसके प्रमाद से कोई काम देखने में न आया अब भी कुछ नहीं गया स्यात् उसका यह बुढ़ापा तुम्हारे ही सहारे से पार लगजाय ईश्वर तुम को चिरञ्जीवि करै ॥ मि० कार्त्तिक शु० ८ संवत् १९२७ तथा अक्टूबर सन् १८७० ई० ॥

६ प्रश्न पत्र किसी रोगी की ओर से वैद्य को ॥

सिद्धिश्री पीयूषपाणि हकीम साहब श्री ६ बांकेलालजी को महावीर की बंदगी और सीताराम पहुँचै ॥

मेरे इस ममत्व के अपराधको क्षमा कीजियेगा, दोमहीने से मेरे पेट में कुछ विकार रहताहै अर्थात् जो खाताहूं पचता नहीं यद्यपि पहिले से आहार घटा दिया है परइतनी अल्पमात्रा भी नहीं पचती इसके सिवाय कभी २ शिर में पीड़ा भी होती है पहिले भी पीड़ा होती थी, पर हकीम मुहम्मद सैयदखां साहब की औषधसे आराम होगया था, फिर अब बीस दिन से बीमार हूं, मेरी नौकरी को आप जानते हैं कि जैसी है, इसमें एक दिन से अधिक एक स्थान पर लंगन नहीं रहता आज यहां कल वहां, उस पर सिवाय घोड़े के किसी और वाहन में निर्वाह नहीं, उसपर यात्रा के क्लेश और खाने पीने में भी जून कुजून होजाती है, सदा एक रोगी सा बना रहता हूं, जब तक आप कृपा करके कोई कल्क वा पाक आदि न बना देंगे तब तक इस व्याधि से छुट्टी न पाऊंगा, इस कारण चाहता हूं कि आप दया करके जैसा कहें वैसा करूं, आप

का बड़ा यश होगा ॥ मि० चैत्र शु० १२ संवत् १९२७ ता० ३ मार्च सन् १८७० ई० ॥

उ० पत्र वैद्य की ओर से रोगी को ॥

सिद्धिश्री ५ मुंशीसाहब श्री महावीरजी को बांकेलाल हकीम की जय सीताराम पहुँचै ॥

आपका कृपापत्र अजीर्ण की पीड़ा मध्ये आया, बड़ी बात है, कि अपने अर्थ पर तो मेरी सुधि आई, चाहे आप सुधि करें या न करें ईश्वर आपको जल्दी नीरोग करे विना नाड़ी देखे आप की चिकित्सा मैं कभी नहीं कर सक्ता रोग बहुत दिन का होगया, और एकाएकी विना देखे भाले औषध लिख देना उचित नहीं है, आज के पांचवें दिन मेरा मुक़द्दमा कचहरी में पेश होनेवाला है, इस कारण वहां मेरा आना अवश्य होगा जो आप घर पर रहें, और थोड़ा श्रम करके हकीम शफ़ाबख़्श साहब के मकान पर आजावें, तो बहुत अच्छी तरह बीमारी खुल जावेगी, और आपके

सामने दवा लिखदूंगा, आप विश्वास रक्खें ईश्वर चाहेगा तो रोग का नाम न रहेगा, परन्तु थोड़े दिनों के लिये या तो आपको छुट्टी लेनी होगी, वा कोई सुखावह वाहन पीनस सी रखना होगा॥ मि० वैशाख वदी ६ संवत् १९२७ तथा माह अप्रैल सन् १८७० ई० ॥

७ प्रश्न पत्र शिष्य की ओर से गुरु को ॥

सिद्धिश्री धर्मधुरन्धर श्री ६ गुरुजी साहब को मदारीलाल की दण्डवत् पहुँचै ॥

आप जानते हैं कि बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी कि दुःखी कङ्गालों के लिये शहर में एक चिकित्साशाला बनवाऊं, पर हर एक कार्य अपने समय पर होता है, इस वास्ते कोई डौल अब तक न देख पड़ा, अब ईश्वरकी कृपा से जान पड़ता है कि उसका समय आगया सो मेरे मन में है कि परसों सवेरे छह बजे नेव खोदी जावेगी उस समय आप का होना बड़ा सिद्धिप्रद होगा कि कोई

अच्छी बात निकल आवै इसी से आप कृपा करके १ घड़ी के वास्ते श्रम करके जरूर आइयेगा पुण्य का काम है॥ शुभ मि० माघ शु० २ संवत् १९२७ तथा माह जनवरी सन् १८७१ ई० ॥

उ० पत्र गुरु की ओर से शिष्य को ॥

स्वस्तिश्री धर्म्मजिज्ञासु मदारीलाल को वाचस्पति का अनेकाशिष पहुँचै ॥

तुम्हारी चिट्ठी मेरे बुलाने के लिये आई तुम्हारा अच्छा संकल्प व उपकार की इच्छा देखकर प्रमोद हुआ ईश्वर तुमको इससे अधिक सामर्थ्य दे, ठीक २ इससे अधिक कोई नाम नहीं और न कोई इससे अधिक अच्छा काम है, परमेश्वर चाहे तो परसों सवेरे मैं अवश्य प्रसन्नतापूर्वक आऊंगा, जो कदापि आना न हो तो इन थोड़ी मोटी २ बातों का ध्यान रखियेगा, जहां मकान बने वह भूमि नीची न हो, उसके चारों दिशा में खुला हो उसके पास कोई नाला, या खेत आदि, ऐसा न हो, कि

जिससे दुर्गन्धि आवे दूसरे जहांतक होसके मकान उत्तर मुख हो किसी के कहने पर न जाना, इसमें सब ऋतुओं में आराम होगा, उन्नत स्थान हो, दीवारें ऊंची हों और चारों ओर खिड़कियां रखवाना पाकशाला आदि दूर हों, प्रतिष्ठायज्ञ का पत्थर लगाया जावे, यद्यपि तुम बुद्धिमान् हो, ये सब बातें तुमने पहिलेही से सोचली होंगी, परन्तु स्मरण रखने के लिये लिखीगई हैं, कि तुम्हारे काम आवें॥ शुभ मि० माघ शु० २ संवत् १९२७ तथा माह जनवरी सन् १८७१ ई० ॥

पांचवां प्रकरण

बराबरवालों के नाम॥

१ पत्र भाईकी ओरसे भाई को ॥

स्वस्तिश्री ३ भाई रामनारायण को शङ्करदत्त का नमस्कार पहुँचै ॥

भाई साहब अबतक यहां वर्षा नहीं हुई है इससे लोग घबराते हैं, ईश्वर अपनी कृपा करे, नहीं

तो सहस्रशः मनुष्य और पशु मरजावेंगे, जाना नहीं कि उधर ऋतु कैसी है, चौपायों के लिये कुछ चारा और घरके निमित्त थोड़े गेहूं और चने भेजवा दीजिये यहां भाव अच्छा नहीं है, भूसा अभी से नहीं मिलता, और न अभी घास जमी आप जितने गेहूं भरवागये थे, वे सब चुकगये, अब केवल बोने भरके रहगये हैं, जो उसमें हाथ लगाया जायगा, तो क्या बोवेंगे, और घोड़े के दाने के लिये बड़ा संकट है, पांच छह सेर दाना प्रतिदिन चाहिये, वह कहांसे आवे, जो वह दो सेर भी पावे, तो बड़ी बात है, जो तुम्हैं इसके बेंचने में कुछ विप्रतिषेध नहीं तो इस समय एक दो गाहक हैं उनके हाथ बेंचडाला जावे ॥ मि० आषाढ़ बदी ५ सं० १९२६ तथा जून सन् १८६९ ई० ॥

२ पत्र भाई की ओर से बड़ी बहिन को ॥

सिद्धि श्री ६ यमयातना से रक्षिणी स्वसा को दुर्गादत्त का यथायोग्य पहुँचै ॥

जब से तुम उस ओर को गई हो, तुम्हारे नाम दो चिट्ठियां भेजी गईं, परन्तु उत्तर अभीतक नहीं आया, जान नहीं पड़ता कि क्या कारण है, तुम्हारे कहने अनुसार भैया गिरिजाशङ्कर के विवाह के लिये कई घरों से बतकही कीगई, उसमें दो स्थानों पर गणना बन गई है, एक तो मुरादाबाद के रईस कालीशङ्कर के यहां, और दूसरी शाहाबाद के रईस चन्द्रशेखर के यहां, दोनों की जाति बिरादरी का व्यवहार तुम अच्छी तरह जानती हो, और दोनों लड़कियां बहुत चतुर और उमर में १६ वर्ष की हैं इस विषय में जाति पांति के लोगों से और पुरनियों से भी पूंछागया, उन सब लोगों का सम्मत होता है कि मुरादाबाद में अच्छा है, परन्तु अब तुम्हारी जैसी इच्छा हो वैसा लिखभेजो और५००) रु० भेज दीजिये, कि जिससे माघ के महीने में वररक्षा की रीति करदीजावे॥ मि० कार्त्तिकबदी ६ संवत् १९२९ तथा अक्टूबर सन् १८७२ ई० ॥

३ पत्र मित्र के नाम ॥

स्वस्ति श्री ३ सौम्य चंदाकर साहब को चंदचूड़ का यथोचित संवाद ॥

आपका पत्र अभी मेरे पास पहुँचा लिफ़ाफ़ा खोलतेही बहुत हर्ष हुआ, ईश्वर ऐसा उत्सव सब के घरमें हो परमात्मा करे वह लड़का आपको बहुत फले, उसकी आयुर्बल बढ़े, आपका यश बढ़ावै और आपकी छाया उसके ऊपर बहुकाल पर्यंत बनीरहे, इसमें संदेह नहीं है, कि वह तुम्हारे अँधेरे घरका दीपक उत्पन्न हुआ इससे जितनी कृतज्ञता और धन्यवाद ईश्वर का करें, वह सब थोड़ा है; हमको तो असीम उल्लास हुआ है सत्य तो यह है, कि जो लोग कहा करते हैं कि सुख के मारे जामा में नहीं समाते, निश्चय यही मेरी गति है, और जबतक अपनी आंखों से उसे नहीं देखता, तबतक मुझे कभी कल न पड़ेगी, इससे परसों मैं अवश्य वहांही होऊंगा, और ५) रु०

दयाशङ्कर की माता हाथ की चुम्बाई के भेजती हैं, निश्चय है कि मेरे साथ वे भी उस दिन आवेंगी, क्योंकि उन्हें यह निश्चयही नहीं होता कि सचमुच यह सुख हमारे भाग्य का है ॥ मिती चैत्र शुक्ल १४ संवत् १९२७ तथा अगस्त सन् १८७० ई० ॥

४ पत्र सेठ के नाम ॥

स्वतिश्री ३ कार्योंयुक्त सेठ रघुवरदयालजी को रामदयाल की जयगोपालजी ॥

सुनने में आता है कि आप जगन्नाथजी जाने का विचार करते हैं, देखा चाहिये कि आपके जाने के पीछे कोठी के प्रयोजक हमारे देनेलेने का व्यवहार कैसे चलाते हैं; अबतक हमेशा जब सर्कार से क़िस्तलगती थी, तो आपके यहां से रुपया लेकर सर्कारी खज़ाने में दाखिल कियाजाता था, और फिर पीछे से देहात की आमदनी का रुपया आप की कोठी में जमा होता रहा है, अब उसी रीति पर आप अपने कारिंदों से आज्ञा देदीजिये कि आप

के पीछे रुपये के देने में किसीतरह टालटूल और ढील न करें बहुत क्या लिखूं ॥ मि० ज्येष्ठ कृ० ५ संवत् १९२८ तथा मई सन् १८७१ ई० ॥

५ पत्र मित्र के नाम ॥

स्वस्तिश्री ३ दृढ़सुहृद् मुज़फ़्फ़रख़ां को अबदुल्करीम का सलाम पहुँचे ॥

आपका पत्र अबदुल्हक़ और अहमदुल्लह के निकाह में मेरे आने के विषय में पहुँचा उससे बड़ी ख़ुशी हुई सच है यह उत्सव का दिन ईश्वरने बड़े कठिन आराधन से दिखाया है मैं तो शिरके बल पहुँचता, पर क्या करूं, कि एक महाजन ने मेरे ऊपर दीवानी में २३२५) रु० की नालिश की है, और जो तारीख़ इस सुभग के विवाह की है, उसी दिन उस मुक़द्दमे की पेशी है, इसकारण विवशहूं जो होसकेगा तो गिरतेपड़ते ज़रूर विवाहके समय रात्रिको वहां पहुँचूंगा, और आपसे भी इस मुक़द्दमे में मतकी आवश्यकता है, क्योंकि इस मुक़द्दमे को

आप अच्छीतरह जानतेहैं, कि दो वर्षमें १५००) रुपयों से २३२५) होगये हैं, मैंने बड़ी जरूरत के वक़ २) ब्याज की दर मानकर दस्तावेज़ लिख दी थी इस मुक़द्दमे में मीर वाजिदअली साहब को वकील कर दिया है, इस विचार से कि आप से और उनसे बड़ा स्नेह है, इससे कृपापूर्वक आप बारहबंकी जाकर मीरसाहब को इस मुक़द्दमे में हमारा मनोरथ भलीभांति समझा दीजिये, उनकी फ़ीस और उपायन अभी ठीक नहीं हुआ, आपको जैसा उचित समझ पड़े बातचीत करके वैसा ठीक करलीजिये॥ मि० पौष शु० १२ संवत् १९२८ वि० तथा दिसम्बर सन् १८७१ ई० ॥

६ पत्र मित्र के नाम ॥

स्वस्तिश्री ३ दयासिन्धु नीतिनिपुण पंडित जयनारायण साहब वकील को दयालसिंह का प्रणाम पहुँचै ॥

हमारे श्वशुर महताबसिंह ने शरीर छोड़दिया

स्वर्गवासी राजा के भाई बन्धुओं में राज्य के निमित्त आपस में झगड़ाहै, इलाक़ा सर्कारने खाम तहसील करदिया है, इसलिये आपसे निवेदन है कि कृपा करके आप दो दिन के लिये यहां आकर मुक़द्दमे का ढंग जानकर मुझे बतादें, कि किस रीति पर यह मुक़द्दमा किया जावे, अर्थात् राजासाहब ने जो बिल अपने नाती निहालसिंह के नाम लिखा था उसपर अभियोग चलावें वा अपने रिक्थपर; जैसी आपकी अनुमति होगी उस के अनुसार किया जावेगा ॥ शुभ मिती पौष शुक्ल १५ संवत् १९२९ ॥

७ पत्र मित्र के नाम ॥

स्वस्तिश्री सकलकलाकुशल श्री ३ दीवान जी को शिवशङ्कर का आशीर्वाद पहुँचै ॥

ईश्वर आपकी बुद्धि सदा शुद्ध रक्खै माधवप्रसाद का इलाक़ा बहुतसी डिगरियां होने के कारण इन दिनों नीलाम हुआ है, उसमें से चार

गांव हमने लिये हैं, जिसमें से दो गांव धुरियां हैं जो वर्षा अच्छी हुई, तो खरीफ़ अच्छी होती है, परन्तु रबी विना कुवों के होना कठिन है, इस समय सब लोगों की यह सलाह पड़ती है, कि दोनों निपनियां गांवों में पांच पांच सात सात कुयें पक्के बनवा दिये जावें, इसलिये आपको लिखताहूं कि आप वास्तुविद्या के काम में बहुत चतुर हैं, आपने बहुतेरे मकान और कुयें बनवाये हैं, अब आप मुझे सम्मति दें, कि अपने आप बनवाना अच्छा होगा, कि ठेके में; कृपापूर्वक आप इसका उत्तर शीघ्र दीजियेगा ॥ शुभ मि० चैत्र शुक्ल ५ सं० १९२८ तथा सन् १८७१ ई० ॥

८ पत्र मित्र के नाम ॥

स्वस्तिश्री ३ भद्र शिवलाल त्रिवेदी को रामाधीन मिश्र का नमस्कार पहुँचै ॥

बहुत दिनों में आपका शुभपत्र पहुँचा, चित्त को बड़ा आनन्द दिया उसका वर्णन नहीं होसक्ता

जो दोषारोपण आपने मुझपर किया सो यह वही कहावत है कि उलटे चोर कोतवालै डांड़ै, मेरी दो तीन चिट्ठियों का उत्तर आपने न लिखा, और अब चतुराई करते हैं, आक्षेप लगाते हैं, और पत्रों के न पहुँचने का बहाना लेतेहो, मिलने के समय मैं आपसे समझ लेता, परन्तु अब आपकी ओर से प्रारम्भ हुआ है तो सारा शेष जातारहा और मन शुद्ध होगया, इस लेखसे भरोसा है कि आप ऐसेही सदा पत्र भेजते रहेंगे क्योंकि पत्री से आधी भेंट होती है, मैं नागौर में ५०) रु० महावारी पर सब डिपुटीइन्स्पेक्टरी के अधिकार पर नियत हूं, दर्शन की बड़ी लालसा है ॥ अधिक शुभ मि० कार्त्तिक बदी ७ संवत् १९२७ तथा सन् १८७० ई० माह अक्टूबर ॥

९ पत्र दोस्त के नाम ॥

स्वस्तिश्री ३ सन्मित्र हकीमुद्दीन साहब को ग़ुलामआजम का सलाम पहुँचै ॥

आपका पत्र पहुँचा, आपने जो जलसे तहजीब की काररवाई का ब्योरा पूंछा, मित्र मेरे आजकल यहां स्त्रीशिक्षाके मध्ये बड़े २ शास्त्रार्थ होतेहैं, बड़े २ ज्ञानवान् लोग अपना २ आशय प्रकट करते हैं, और कहते हैं कि स्त्री और पुरुष दोनों ईश्वर के जन हैं और ईश्वर की उत्तम वस्तुओं में इन दोनों का बराबर अंश है, विद्या जिससे ज्ञान उत्पन्न होता है, उससे स्त्रियां क्यों अलग रक्खी जावें, यह केवल पुरुष का हठ धर्म और स्त्रियोंकी सरासर हानि करनी है, स्त्रीशिक्षा के अनेक फल कहतेहैं, सबसे बड़ा यह फल है, कि इससे उन्हें पूरी सभ्यता प्राप्त होगी और जिस आशय से परमात्मा ने स्त्रियोंको बनाया है वह प्रयोजन पूरा होगा, अर्थात् सब रीतिसे पुरुषकी सहधर्मिणी और शोचानिवा-रिणी होंगी, इनस्त्रियोंकी सन्ततिभी अच्छी होगी, क्योंकि माता पिता की संगति के गुण से कोई अधिक गुण बालकों पर नहीं होता तिस पीछे

गृहस्थी और लोकव्यवहार के कामों में निपुण होंगी, और घरकी व्यवस्था से जो बहुतसी विप-त्तियां लोगों पर पड़तीहैं, उनसे अपने घरको बचा-ेंगी, ऐसेही यह कोई नहीं कहता कि स्त्रीशिक्षा र्म से विरुद्ध है, परन्तु लोकाचार देखकर संदेह करते हैं, आपका विचार इस में क्या है ॥ मि० ैशाखशु० ८संवत् १९२७तथा सन् १८७० ई०॥

१० पत्र खां के नाम ॥

स्वस्ति श्री मित्र श्री ३ झगड़ालूखां को सुलह-ाजखां का सलाम पहुँचे ॥

लोगों से सुना कि यद्यपि सारेदेश से झगड़ा खेड़ा उठगया, परन्तु तुम्हारे यहां अभीवही अंधेर कोई महीना ऐसा नहीं बीतता कि जिसमें दो क फसाद न हों, इस बीच यह सुनपड़ा, कि दश दिन पहिले किसी झगड़े में आप पर ५००)रुपये ुर्माना भी होगये, इसके सुनने से बहुत दुःख आ, अच्छा हो कि तुम यथाशक्ति अपना स्वभाव

सुधारो सद्वृत्ति धारण करो और धर्मोपदेश की किताबें बहुधा देखाकरो, और जिस समय क्रोधहो एक घूंट पानी पीकर यह मनमें विचार लो कि इस क्रोधका अन्त क्या होगा, और जो चुप होरहोगे तो कितनी आपत्तियों और विपत्तियों से बचाव रहेगा. ईश्वरने जो मनुष्यको पशु पक्षियों से उत्तम कियाहै तो केवल ज्ञानही का भेदहै, जो मनुष्य भी पशु पक्षियों की भांति लड़ाई और कलह में पड़ा रहे, तो फिर उस में और बाघ सिंहादिकों में क्या अन्तर है, यद्यपि यह पत्र पढ़कर आप अप्रसन्न होंगे परन्तु जब आपका क्रोध शान्त होगा और आप विचारांश करेंगे तो मेरा बड़ा गुण मानेंगे ॥ मि० श्रावण शु० तृतीया संवत् १९२८ तथा जौलाई सन् १८७० ई० ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

इति